वह खिड़की

- श्रावणी सुळ

सभी पाठकों को
सहृदय समर्पित...

मनोगत

वह खिड़की , यह मानवीकरण अलंकार में लिखी गई एक काव्यात्मक अभिव्यक्ति है। हमारी ज़िन्दगी में आसमान, सूरज, चाँद, नदियाँ, समंदर जैसे प्रतीक हमें इंसानी जज़्बातों को गहराई तथा ऊँचाई से समझने में मदद करते हैं। खुद को अपनी देह से परे जानने और महसूस करने में मदद करते हैं। इन्हीं में से एक है, वह खिड़की। खिड़की जो हमारी तन्हाई की सबसे करीबी गवाह होती है। उस खिड़की के जरिए अपने आपको और जिंदगी को बेतहाशा जीने की ख्वाहिश में यह कविताएँ लिखी गईं और यह लुत्फ सबके साथ साझा करने के लिए यह किताब हाजिर है। वह खिड़की!

१. बेबाक

कितनी बेबाक होगी वह खिड़की,
जो बंदिशों को अपनाती नहीं
सच कहने से डगमगाती नहीं
उसने न शीशे का सौंदर्य चुना
न सलाखों की सुरक्षा को चुना
दीवार में गढ़ा चौकोर बन के रही
मगर हर हाल में वह बेबाक रही

२. बेपरवाह

कितनी बेपरवाह होगी वह खिड़की
जो आँधियों से डरती नहीं
उनका खुलके स्वागत करती है
किसी की उम्मीद पे जीती नहीं
खुदसे इतना प्यार करती है
जो कोई परदा नही रखती
अपने असल रूप में रहती है
जिसमें इतनी जिंदादिली है कि
दीवारें भी उसमें साँस लेती हैं

३. ख़ूबसूरत

कितनी ख़ूबसूरत होगी वह खिड़की,

जिसे खोलने पर …

सपनों के बादल छा जाते हैं

पेड़ धीमी आवाज़ में मुस्कुराते हैं

पंछी आसमान के गीत गाते हैं

जुगनू उजालों की नज़्म लिखते हैं

मंज़िलों के रास्ते नज़र आने लगते हैं

अंत में रास्ते ही मंज़िल हो जाते हैं

४. आज़ाद

कितनी आज़ाद होगी वह खिड़की,
जो परदों को परछाई बनाकर रखती है
सलाखों के पीछे होने से इंकार करती है
जिसके पार देखो तो दूर तक
सिर्फ आकाश दिखता है
जिसके भीतर गहराई तक
अपना ही प्रतिबिंब दिखता है

५. सपने

कितने सपने देखती होगी वह खिड़की,

जिसके परदे उसके पर बन जाते हैं

जिसके भीतर ख्वाहिशों के घर बन जाते हैं

जिसे निहारते हुए हम ख़्वाब बुनते हैं

जिससे सिर टिकाए दिल की आवाज़ सुनते हैं

वह कहती है कि तुम उड़ना चाहते हो

वह कहती है कि तुम उड़ना जानते हो

फिर,

हर डर से हम आज़ाद हो जाते हैं

अंततः हम आसमान हो जाते हैं

६. ग़मगीन

कितनी ग़मगीन होगी वह खिड़की,
जिसके खुलते ही हवा ने रुख मोड़ लिया
जिसने हमेशा खुदको तन्हा ही पाया
वह महफिलों से अंजान रह गई
अपने ही शहर में मेहमान हो गई
दीवारें भी उससे घृणा करती हैं
उसे अपनाने से मना करती हैं
अंत में उसका कसूर मालूम हुआ कि
वह सबको उजागर करना चाहती थी
सबने भर लिए थे जहन में अंधेरे
उनकी आँखों में रोशनी चुभती थी

७. अंधेरे

कितने अंधेरों से घिरी होगी वह खिड़की
जिसके किनारे कभी एक दिया तक नहीं जला
जिसके पार क्षितिज पर सूरज नहीं ढला
जिसपे परदों की परछाई तक नहीं पड़ती
जिसे सितारों की चमक बिल्कुल नहीं भाती
जब कोई उसके लिए मशाल ले आया
उसे उम्मीद नहीं, अपना अंत दिखाई दिया

८. वफादार

कितनी वफादार होगी वह खिड़की
जो चुपचाप सबकुछ देखती है
जो बिन बोले सबकुछ सुनती है
जो बंद कमरों की आवाजें
कोनों में महफ़ूज़ रखती है
वह खिड़की,
दरीचा है और दरिया भी

१. तन्हा

कितनी तन्हा होगी वह खिड़की,
जिसके कोनों में…
न धूल जमी है, न किसी ने सपने बुने
उसके अल्फ़ाज़ सिर्फ उसी ने सुने
जो दीवार का हिस्सा बनके रह जाती है
जिसे देखके नजरें अनदेखा करती हैं
अगर मंज़र पलट जाए…
कहीं से मदहोश हवा आए
उसके कठोर तार छेड़ जाए
अगर वह खिड़की खुल जाए
धरती आसमान एक हो जाए
क्षितिज सच में सच हो जाए

१०. बेकरार

कितनी बेकरार होगी वह खिड़की,

जिसके खुलते ही...

हवा चेहरे को छू लेती है

रोशनी मन के अंधेरे मिटाती है

रात और भी खूबसूरत हो जाती है

बारिश बेबाक बरसना चाहती है

दिल की राहें नया मोड़ लेती हैं

मन की ख्वाहिशें पिंजरा तोड़ देती हैं

११. बेबस

कितनी बेबस होगी वह खिड़की,

जो अब खुलना नहीं चाहती

आकाश से मिलना नहीं चाहती

जो उम्मीदों से हार गई है

जो उम्मीदों के पार गई है

जिसने अपनी तबाही देखी है

जिसकी आँखें फिर भी सूखी हैं

अब वह सपने नहीं देखती

अपनी कहानी लिखती है

वह लोहे के कंकाल पर

अपनी जवानी लिखती है

१२. बातें

कितनी बातें करती होगी वह खिड़की,
जिसकी ओर एक नजर देखने से
मन में कविता जाग उठती है
जिसकी ओर बढ़ते हुए
कलम बेकरार हो जाती है
जिसके अंततः खुल जाने से
कविता उड़ने लगती है
जिसके साथ वक्त बिताने से
कविता ठहरने लगती है
और जिसको जान लेने से
आदमी खुद कविता हो जाता है

१३. क़रीबी

कितनी क़रीबी होगी वह खिड़की
जो दीवार के एक कोने की
पूरी दुनिया होती है
जिसकी गैरमौजूदगी में
मन में घुटन रहती है
जिसके आसपास होने से
हमेशा तसल्ली रहती है
और जिसके न होने से
उसकी तलाश रहती है

१४. खयाल

किसी के खयालों में होगी वह खिड़की,
जो यादों में खोई-खोई सी लगती है
जो हर दिन नई-नई सी दिखती है
जो कोयल के गीतों में खो जाती है
जो सावन में बावरी हो जाती है
जिसे जब देखो गुमशुदा होती है
हर वक़्त पहले से ज़्यादा होती है

१५. मजबूर

कितनी मजबूर होगी वह खिड़की
जिसे कभी खोला नहीं गया
जिससे कुछ भी बोला नहीं गया
वह हवाओं को महसूस कर सकी
मगर कभी साँस नहीं ले सकी
वह मन ही मन घुटती रहती थी
जमाने की तोहमते सहती थी
क्योंकि,
उसने अपने भीतर, सबके दुख समा लिए थे
उसने सबसे ख़ामोश रहने के वादे किए थे

१६. यादें

कितनी यादें गिनाती होगी वह खिड़की,

जो हर शाम यह मंज़र दिखाती है…

कंधे पर बस्ता लेकर

बच्चों का घर लौट आना…

फिर से बच्चा बनने का मन करता है

फिर से बस्ता उठाने का मन करता है

दरअसल, सच कहे तो अब

फिर से घर लौटने का मन करता है

१७. जज़्बाती

कितनी जज़्बाती होगी वह खिड़की,

जिसने मेरे मौन को सुना

जिसने मेरे मन को सुना

जिसने यक़ीन करना सिखाया

दुख के पार जाना सिखाया

वह मुझे सारे मंजर दिखाती रही

मेरे कमरे को रंगों से भरती रही

जब खुल जाए तो जैसे

जिंदगी से मिलवाती हो

बंद हो जाए तो मानो

बाहों में भर लेती हो

वह मेरी आँखों में

सपने पिरोती थी

उम्मीदें बोती थी

काजल भरती थी

१८. बेचैन

कितनी बेचैन होगी वह खिड़की,
जो अक्सर बाहर देखने के लिए...
किसी खिड़की की तलाश में रहती है
वह अपनी पहचान भूल जाती है
भूल जाती है कि उसके कारण
अंधेरों की आँखें चमक उठी
उसकी सतह पर चाँद नज़र आया
तो हजारों दिलों में यादें दमक उठी
मगर वह खुद रोशनी की तलाश में है
वह कल्पनाओं की गिरफ्त में है
वह फ़िलहाल बेचैन है!

१९. इंतज़ार

किसी के इंतज़ार में होगी वह खिड़की,
जो भरी दोपहर में आसमान को तकती है
सूरज की आग में देर तक दहकती है
शाम होने तक यह बेचैनी ढलने लगती है
वह अपनी सारी दहक भूलने लगती है
उसे चाँद का इंतज़ार था
जो कभी माथे की बिंदीया था
कभी नाक की नथनी था
कभी पैर की झांझर था
और अंत मे…
दूर से देखा हुआ एक ख़्वाब था

२०. कहना

कुछ कहना चाहती होगी वह खिड़की,
जिसके खुलते ही सुनाई देती है चरमराहट
दिल को महसूस होती चंद शब्दों की आहट
हवा जब उसे छू लेती है
कोनों से उसके धूल उड़ती है
जैसे कोई किताब खुलना चाहती हो
खामोशी अब बोलना चाहती हो
जो इंसानी ज़ुबाँ ही समझ न पाए
वह एक बेज़ुबाँ को कैसे सुन पाए
आखिर वह क्या कहना चाहती थी
दुनिया सोचती ही रह गई
अंततः उसकी चरमराहट

एक कवि की कविता हो गई ,

बेज़ुबाँ होना कवि की फ़ितरत में शामिल है

कवि होना खिड़की के लहजे में शामिल है

२१. प्रेम

किसी के प्रेम में होगी वह खिड़की,

जिसकी चौखट पे अगर

दस्तक दे जाए सावन

वह बारिश की बूँदों में

अमृत चखती है

जिसकी छाँव तले गर

चहचहाए कोई पंछी

वह प्रेम की पुकार से

ईश्वर को भजती है